Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2020 SHISRRJ | Volume 3 | Issue 1 | ISSN : 2581- 6306

भारवि और माघ : एक अध्ययन

डॉ0 ज्योति
एम.ए., पीएच.डी. (संस्कृत)
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर (बिहार)

माघ के महाकवि होने में तनिक भी संदेह नहीं है बहुलों का अनुमान है कि माघ के साम्प्रदायिक प्रेम से उत्तेजित होकर अपने पूर्ववर्ती 'भारवि' से बढ़ जाने के लिए बड़ा प्रयत्न किया है। भारवि शैव थे अथवा कम से कम शिव के बड़े भक्त थे। इनका काव्य शिव के वरदान के विषय में है। माघ वैष्णव थे। इन्होंने विष्णु–विषयक महाकाव्य की रचना की हैं अतएव महाकाव्य में विष्णु के पूर्णावतार श्रीकृष्ण के द्वारा शिशुपाल के मारे जाने का विस्तृत वर्णन है। वह स्वयं अपने ग्रन्थ को 'लक्ष्मीपतेश्चरितकीर्त्तनमात्रचारू' कहते हैं। भारवि से बढ़ जाने के लिए माघ ने कुछ भी नहीं उठा रखा है। 'किरातार्जुनीय' को अपना आदर्श मानकर भी माघ ने अपने काव्य में बहुत कुछ अलौकिक चमत्कार पैदा कर दिया है। किरात के समान ही माघकाव्य भी मंगलार्थक 'श्री' शब्द से आरंभ होता है। किरात के आरंभ में 'श्रियः कुरूणामधिपस्य पालिनी' है, उसी प्रकार माघ के प्रारंभ में श्रियः पतिः श्रीमति शासितुं जगत् है।

भारवि ने किरात में प्रत्येक सर्ग के अन्तिम पद्य में 'लक्ष्मी' शब्द का प्रयोग किया है। माघ ने भी इसी तरह अपने काव्य के सर्गान्त पद्यों में 'श्री' का प्रयोग किया है। शिशुपालवध तथा किरातार्जुनीय के वर्णन–क्रम में भी समानता है। दोनों महाकाव्यों के प्रथम सर्ग में संदेश कथन है– किराल में वनेचर के द्वारा युधिष्ठिर के पास; माघ में नारद के द्वारा श्रीकृष्णचन्द्र के सामने। दूसरे सर्ग में राजनीतिक कथन है। किरात में भीम के कथन के अनन्तर व्यासजी के उपदेशानुसार कार्य किया गया है। माघ में भी इस प्रकार बलराम के मत को न मानकर उद्धव के द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त के अनुसार कार्य करने का वर्णन है। अनन्तर दोनों में यात्रा का वर्णन है। ऋतु वर्णन भी दोनों में है– किरात के चतुर्थ सर्ग में तथा माघ के षष्ठ सर्ग में। पर्वत का वर्णन भी एक समान है–किरात के 5 वें सर्ग में हिमालय का तथा माघ के चौथे सर्ग में रैवतक पर्वत का। अनन्तर दोनों में सन्ध्याकाल, अन्धकार, चन्द्रोदय, सुन्दरियों की जलकेलि आदि विषयों के वर्णन कई सर्गों में दिये गये हैं। किरात के 13 वें तथा 14वें सर्ग में अर्जुन तथा किरातरूपधारी शिव में वाण के लिए वाद–विवाद

हुअ है; माघ के 16वें सर्ग में ऐसा ही विवाद शिशुपाल के दूत तथा सात्यकि में हुआ है। किरात के 15वें तथा माघ के 19वें सर्ग में चित्रवन्धों में युद्धवर्णन है। इस प्रकार समता होने पर भी किरात और माघ में बड़ी भिन्नता है। कहीं–कहीं भारवि की छाया माघ पर दीख पड़ती है परन्तु माघ की संस्कृत साहित्य में कुछ ऐसी विशेषता है जो भारवि में देखने को न मिलेगी। इसीलिए रसिक जन माघ के सामने भारवि को हीन समझते हैं– तावद्भा भारवेर्भाति यावन्माघस्य नोदयः।

'माघे सन्ति त्रयो गुणाः'। यह तो सब पण्डित जानते हैं कि माघ में तीनों गुण है– उपमा, अर्थगौरव तथा पदलालित्य। इन तीनों गुणों का सुभग दर्शन हमें माघ की कमनीय कविता में हो रहा है। भारवि की प्रसिद्धि केवल अर्थगौरव के लिए है, परन्तु माघ में इसके साथ–साथ अन्य गुणों की भी उपलब्धि होती है। बहुत से आलोचक पूर्वोक्त वाक्य को माघभक्त किसी कवि पण्डित का अविचारित रमणीय हृदयोद्गार बतलाते हैं, परन्तु वास्तव में पूर्वोक्त आभाणक में कुछ सत्यता है। माघ में कालिदास जैसी उपमाएँ भले न मिले, परन्तु फिर भी इसमें न सुन्दर उपमाओं का अभाव है, न अर्थगौरव की कमी। पदों का ललित विन्यास तो निःसन्देह प्रशंसनीय है। माघ की पदशय्या इतनी अच्छी है कि कोई भी शब्द अपने स्थान से हटाया नहीं जा सकता। इसीलिए धनपाल का यह कथन कितनी सत्यता से भरा है–

माघेन विघ्नितोत्साहा नोत्सहन्ते पदक्रमे।
स्मरन्तो भारवेरेव कवयः कपयो यथा।।

जिस प्रकार माघ के ठंढ़े महीने में सूर्य भगवान् के आतप की सेवा करने पर भी बेचारे कपि लोग पदक्रम रखने में, चलने–फिरने में असमर्थ हो जाते हैं, उत्साहहीन हो जाते हैं; ठीक उसी प्रकार माघ कवि की पदरचना देखकर कवियों का दिल काय लिखने में ठंढ़ा पड़ता जाता है। पदक्रम (पदरचना) के लिए उनमें उत्साह ही नहीं रहता, चाहे वे भारवि के पदों का कितना ही स्मरण करें, इस कविता–कार्य में बेचारे सर्वथा असमर्थ ही रहते हैं। माघ के सामने कविजन की दशा माघ मास के कपिजन जैसी हैं यह उक्ति चमत्कारिणी होने पर भी सत्य ही है। माघ के पदविन्यास में कुछ ऐसी ही विशेषता है। यह तो प्रसिद्ध ही है कि नवसर्ग बीत जाने पर माघ में 'नव' (नया) शब्द नहीं मिलता– 'नवसर्गगते माघे नवशब्दो न विद्यते।'

माघ केवल सरस कवि न थे, प्रत्युत एक प्रचण्ड सर्वशास्त्रतत्त्वज्ञ विद्वान थे। भारवि में राजनीति पटुता अवश्य दीख पड़ती है, श्रीहर्ष में दार्शनिक उद्भटता अवश्य उपलब्ध होती है, परन्तु माघ में सर्वशास्त्रों का जो परिनिष्ठित ज्ञान

दृष्टिगोचर होता है वह उन दोनों कवियों में कहाँ? उनमें भी पण्डित्य है, परन्तु वह केवल एकाङ्गी है। परन्तु माघ का पण्डित्य सर्वगामी है – सब शास्त्रों के विषय में हैं वेद तथा दर्शनों से लेकर राजनीति तक का विशिष्ट परिचय इनके काव्य में पाया जाता है।

माघ का श्रुतिविषयक ज्ञान अत्यन्त प्रशंसनीय है। प्रातःकाल के समय इन्होंने अग्निहोत्र का सुन्दर वर्णन किया है। हवनकर्म में आवश्यक सामधेनी ऋचाओं का उल्लेख किया है (11 सर्ग, 41 श्लोक)। वैदिक स्वरों की विशेषता भी आपको भली–भाँति मालूम थी। स्वरभेद से अर्थभेद हो जाया करता है, इस नियम का उल्लेख मिलता है। एक पद में होनेवाला उदात्त स्वर अन्य स्वर 'निघात' हो जाते हैं, स्वरविषयक इस प्रसिद्ध नियम का प्रतिपादन माघ ने शिशुपाल के वर्णन में बड़ी सुन्दर रीति से किय है (निहन्त्यरीनेकपदे व उदात्तः स्वरानिव)। चौदहवें सर्ग में युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ का बड़ा ही विस्तृत तथा सुन्दर वर्णन माघ के विशिष्ट वैदिकत्व क पर्याप्त परिचायक है।

दर्शनों का भी विशिष्टि ज्ञान माघ में दिखाई पड़ता है। सांख्य के तत्त्वों का निदर्शन अनेक स्थलों पर पाया जाता है। प्रथम सर्ग में नारद ने श्रीकृष्णचन्द्र की जो स्तुति की है, वह सांख्य के अनुकूल है। योगशास्त्र की प्रवीणता भी देखने में आती है। 'मैत्र्यादिचित्तपरिकर्मविदो विधाय' आदि पद में चित्तपरिकर्म, सबीजयोग, सत्त्वपुरूषान्यताख्याति – योगशास्त्र के परिभाषिक शब्द है। आस्तिक–वैदिक दर्शनों की कौन कहे, नास्तिक दर्शनों में भी माघ का ज्ञान उच्च कोटि का था। माघ बौद्ध–दर्शनों से भी भली–भाँति परिचित थे। वे उसके सूक्ष्म विभेदों के भी ज्ञाता थे। वे राजनीति के भी अच्छे जानकार थे। बलराम तथा उद्धव के द्वारा राजनीति की खूबियाँ खूब ही दिखलायी गयी हैं। प्रत्येक ने अपने मत का समर्थन बड़ी योग्यता से किया है। माघ का ज्ञान नाट्यशास्त्र में भी बड़ा ऊँचा था। उन्होंने नाट्यशास्त्र के विभिन्न अङ्गों की उपमा बड़ी सुन्दरता से दी है। माघ एक प्रवीण वैयाकरण थे। उन्होंने व्याकरण के सूक्ष्म नियमों का पालन अपने काव्य में भली–भाँति किया है। व्याकरण के आर्षग्रन्थों का भी उल्लेख उन्होंने पूर्वोदाहृत पद्य में किया है। उन्होंने एक जगह 'परिभाषा' से बड़ी सुन्दर उपमा दी है। इन सबसे माघ के व्याकरण का अखण्ड पाण्डित्य स्पष्ट ही प्रतीत होता है। माघ का ज्ञान ललित कलाओं में भी ऊँची कक्षा का था। वे संगीतशास्त्र के सूक्ष्म विवेचक थे। जगह–जगह पर संगीतशास्त्र के मूल तत्त्वों का निदर्शन कराया गया है। नीचे के पद्य में कविवर माघ की संगीत–शास्त्र विषयक अभिज्ञता पूर्ण रूप से प्रकट हो रही है। इस पद्य में प्रातःकाल के संजीवन समय में पंचम् तथा ऋषभ को छोड़कर षड्ज स्वर आलापने का उल्लेख है। महर्षि भरत के अनुसार संगीतशास्त्र में भी यही प्रथा प्रचलित है।

अलंकारशास्त्र में माघ की प्रवीणता की प्रशंसा करना व्यर्थ है। वह तो कवि का अपना प्रदेश है। माघ ने राजनीति के गूढ़ तत्त्वों को सम्यक समझाने के लिए हृदयङ्गम कराने के लिए अलङ्कारशास्त्र के नियमों का सहारा लिया है। एक प्रख्यात पद्य में कवि ने रसोत्पत्ति का सुन्दर वर्णन किया है। माघ ने एक सच्चे कवि आलङ्कारिक के ऊँचे पद से शब्द तथा अर्थ दोनों का 'काव्य' माना है।

कहने का सारांश यह है कि माघ एक महान् कवि–पण्डित थे। उनका ज्ञान हिन्दू दर्शन, बौद्ध दर्शन, नाट्यशास्त्र, अलङ्कारशास्त्र, व्याकरण, संगीत आदि शास्त्रों में बड़ा उत्कृष्ट था। माघ ने अपना सम्पूर्ण ज्ञान कविता–कामिनी को अर्पण कर दिया है– उन्होंने कविता की बाँकी छठा को सजाने के लिए समग्र संस्कृत साहित्य का उपयोग करने में कुछ भी उठा नहीं रखा है। माघ की यह विशेषता उन्हें महाकवियों की श्रेणी में उन्नत बना रही है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. निपातिसुहृत्स्वामिपितृव्यभ्रातृमातृलम्।
   पाणिनीयमिवाऽऽलोकि धीरैस्तत् समराजिरम्।। –19/75.
2. संशयाय दधतोः सरूपतां दूरभिन्नफलयोः क्रियां प्रति।
   शब्दशासनविदः समासयोर्विग्रहं व्यवससुः स्वरेण ते।। –14/24.
3. बिमुच्यमानैरपि तस्य मन्थरं गवां हिमानीविशदैः कदम्बकैः।
   शरन्नदीनां पुलिनैः कुतूहलं जलददुकूलैर्जधनैरिवादधे।। –वही, 4.11.
4. गतान्पशूनां सहजन्मबन्धुतां गृहाश्रयं प्रेम वनेषु विभ्रतः।
   ददर्श गोपानुपधेनु पाण्डवः कृतानुकरानिव गोभिरार्जवे।।
   आर्जवे विधेयत्वे गोभिः पशुभिः कृतानुकाराननुकृतानिव स्थितानित्युत्प्रेक्षा।
   –वही, 4.13
5. शब्दार्थौ सत्कविरिय द्वयं विद्वानपेक्षते।–2/86
6. स्थायिनोऽर्थे प्रवर्तन्ते भावाः सञ्चारिणो यथा।
   रसस्यैकस्य भूयांसस्तथा नेतुर्महीभृतः।। –2/87